15 दिसम्बर, 2014 को कैलाश मानसरोवर पर एक पुस्तक के विमोचन के अवसर पर माननीय अध्यक्ष महोदय का भाषण

1. रामचरितमानस में कैलाश पर्वत के बारे में कहा गया है-

परम रम्य गिरिबरू कैलासु, सदा जहां शिव उमा निवासु।

श्री तरूण विजय जी ने इसी भाव को केन्द्र में रखकर अपनी पुस्तक की रचना की है जिसका चीनी भाषा में अनुवाद आप सबके सामने प्रस्तुत है। कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील हमारे मन-मस्तिष्क में उस परम आस्था का केन्द्र है जो निर्वाण की जगह है, जो त्याग का परम केन्द्र है, जो उपासना का परम-बिन्दु है, जो मुक्ति का भी मार्ग है, जो गुरूओं और देवों की जगह है। यह पुस्तक पिछले दो हजार सालों से चल रही भारत और चीन के बीच परस्पर सम्पर्क, संवाद और समन्वय को और आगे बढ़ाएगा।

2. मैं सौभाग्यशाली हूं कि कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील की मंत्रमुग्ध कर देने वाली अत्यन्त पुनीत आध्यात्मिक यात्रा का चीनी भाषा में चित्रण करने वाली इस पुस्तक के विमोचन का अवसर प्राप्त हुआ। जहां हर भाव निराकार है, फिर भी पर्वत ॐ आकार में दर्शन देते हैं।

3. चीन में बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को ले जाने वाले भारतीय सन्यासियों जैसे कुमारजीव को हजारों वर्ष पहले तांग वंश के समय में "चीन के शिक्षक " की उपाधि दी गई थी। जहां ऋषि कश्यप और सामंत भद्र की स्मृतियों को अभी भी ताजा रखा गया है, वहीं भारत में भी हुएनसांग और फाह्यान की यात्राओं को पूरे सम्मान और स्नेह के साथ याद किया जाता है। आधुनिक युग में डा. कोटनिस और कविगुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर ने दोनों देशों के बीच मित्रता और सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। इस पुस्तक के माध्यम से दोनों देशों के बीच परस्पर सम्मान और शैक्षिक जुड़ाव को और आगे बढ़ाया गया है।

4. मानसरोवर न केवल हिन्दू धर्मावलम्बियों के लिए पवित्र तीर्थ स्थल है बल्कि बौद्ध और जैन धर्म के अनुयायी भी इस धार्मिक स्थल के प्रति गहरी आस्था रखते हैं। गुरू नानक देव ने भी यहां की यात्रा की थी और लेह के निकट स्थित गुरूद्वारा पत्थरसाहेब उनकी इसी यात्रा की स्मृति है।

5. आज कैलाश मानसरोवर का विषय है, अतः मैं नाथूला, सिक्किम से वहां के लिए एक नया रास्ता खोलने हेतु राष्ट्रपति जिनपिंग जी की सराहना करती हूं। इस रास्ते से यात्रा सुगम होगी

जिससे दोनों देशों के बीच सद्भावना बढ़ेगी तथा द्विपक्षीय संबंध और सुदृढ़ होंगे। आध्यात्मिक यात्राएं विश्व के सभी मतों के अनुयायियों के जीवन में खुशी, परमानंद और पूर्णता की भावना उत्पन्न करती हैं। कैलाश मानसरोवर की यात्रा भी उस परम शक्ति के चरणों में स्वयं को समर्पित करने का परम प्रयास है। मैं पुस्तक के लेखक श्री तरूण विजय और सिचुआन विश्वविद्यालय के साउथ स्टडी सेंटर के संपादकों को इस पुस्तक पर सूझ-बूझ से कार्य करने के लिए बधाई देती हूं।

6. चीनी भाषा की यह पुस्तक साक्षात् शिव से लेखक की संवाद की कोशिश है। मुझे विश्वास है कि यह भाव चीन में जन-जन तक पहुंचने में कामयाब होगी और यह स्वर्गसरीखी सुन्दर भूमि भारत और चीन के बीच दुनिया के लिए एक शांति का टापू बने, ऐसी मेरी कामना है।